मध्य प्रदेश के रीवा जिले के शैक्षिक परिदृश्य का अध्ययन

बघेल राजाओं के शासन काल में रीवा जिले की जनता का प्रमुख व्यवसाय कृषि था। कषि कार्य परम्परागत होने के कारण जिले की जनता अपने व्यवसाय के लिए एक सीमित क्षेत्र में रहकर ही सम्पूर्ण जीवन यापन करती थी। बघेल राजाओं के शासन काल में प्राथमिक शिक्षा का प्रबन्ध राजा के आधीन ही हुआ करता था। तथापि राजदरबार द्वारा संचालित प्राथमिक स्तर के विद्यालयों में नियुक्त शिक्षक समर्पित होकर छात्रों को शिक्षा प्रदान करते थे। परम्परागत कृषि व्यवसाय के कारण समाज के मध्यम वर्ग के व्यक्ति जहाँ शिक्षा को गौड़ उपादान के रूप में स्वीकार करते थे, वहीं आर्थिक रूप से पिछड़े तथा वंचित वर्ग के लोग शिक्षा ग्रहण करने से डरते थे। इसके अतिरिक्त क्षेत्र की भौगोलिक स्थिति, अंधविश्वास एवं सामाजिक कुरूतियाँ भी शिक्षा के प्रचार–प्रसार में बाधक थीं। जिससे स्वतंत्रता प्राप्ति के पूर्व तक जिले में शिक्षा प्रचार–प्रसार अत्यन्त बाधक थी। जिससे स्वतंत्रता प्राप्ति के पूर्व तक जिले में शिक्षा प्रचार–प्रसार अत्यन्त न्यून था।

स्वतंत्रता प्राप्ति के पश्चात् सरकारी स्तर पर छोटे–छोटे कस्बो में प्राथमिक विद्यालयों का संचालन किया गया तथा तहसील एवं जिले स्तर पर कुछ माध्यमिक तथा हाई स्कूलों का संचालन किया गया। सन् 1947–1956 तक की अवधि में प्राथमिक विद्यालयों का उन्नयन हाई स्कूल में तथा हाई स्कूलों का उन्नयन महाविद्यालयों के रूप में किया गया। इसी कड़ी में रीवा स्थित दरबार हाई स्कूल का उन्नयन दरबार कालेज के रूप में किया गया, जो इस जिले के उच्च शिक्षा के प्रथम महाविद्यालय के रूप में विकसित हुआ। संविधान के क्रियान्वयन के साथ–साथ राज्य के नीति–निर्देशक तत्वों के रूप में वर्णित शैक्षिक नीति के तहत 6 से 14 वर्ष तक के बच्चों को निःशुल्क प्राथमिक शिक्षा उपलब्ध कराने की दृष्टि से जिले में तेजी से अधिकतम प्राथमिक विद्यालयों की स्थापना की गई।

राजेंद्र प्रसाद
शोधछात्र
अवधेश प्रताप सिंह
विश्वविद्यालय रीवा

सारणी क्रमांक – 4.19

रीवा जिले की सामान्य शैक्षिक जानकारी

क्र.	विकासखण्ड का नाम	बी.आर.सी. की संख्या	सी.आर.सी. की संख्या	ग्रामों की संख्या	पंचायतों की संख्या	हायर सेकेण्ड्री स्कूलों की संख्या	वार्डों की संख्या	बसाहटों की संख्या
1.	रीवा	1	23	221	94	13	45	523
2.	रायपुर कर्चुलियान	1	19	275	99	10	15	516
3.	गंगेव	1	16	296	100	13	30	496
4.	सिरमौर	1	20	322	86	11	30	540
5.	मऊगंज	1	14	332	95	11	15	444
6.	नईगढ़ी	1	14	219	87	9	15	390
7.	हनुमना	1	18	328	97	9	15	475
8.	त्योंथर	1	18	412	81	7	15	558
9.	जवा	1	16	330	76	6	10	656
योग		9	158	2735	815	89	190	4598

स्त्रोत : कार्यालय, जिला शिक्षा केन्द्र रीवा (म.प्र.)

उपरोक्त सारणी से स्पष्ट होता है कि रीवा जिले में कुल मिलाकर 4598 बसाहटें हैं, जिले मे सर्वाधिक बसाहटें जवा विकासखण्ड में हैं जबकि सबसे कम बसाहटें नईगढ़ी विकासखण्ड में हैं। जिले में कुल ग्रामों की संख्या 3735 है जिसमें सर्वाधिक 412 ग्राम त्योंथर विकासखण्ड में आते हैं तथा सबसे कम 219 ग्राम नईगढ़ी विकासखण्ड में आते हैं। इसी प्रकार जिले में 815 ग्राम पंचायतें हैं जिसमें से सर्वाधिक 100 ग्राम पंचायतें गंगेव विकासखण्ड के अन्तर्गत आती हैं। जिले में कुल वार्डो की संख्या 190 है। जिले में बी.आर.सी. की संख्या 09 तथा सी.आर.सी. की कुल संख्या 158 है। हाई स्कूल की संख्या जिले में संख्या 89 है जिसमें से सर्वाधिक 13 रीवा विकासखण्ड में तथा न्यूनतम 6 जवा विकासखण्ड में हैं।

सारणी क्रमांक – 4.20

रीवा जिले में विकासखण्डवार शालाओं की संख्या

क्र.	विकासखण्ड का नाम	प्राथमिक शाला	माध्यमिक शाला	कुल शाला	जनशिक्षा केन्द्र	हेड स्टार्ट
1.	रीवा	413	117	530	23	10
2.	रायपुर–कर्चु.	393	111	504	19	9
3.	सिरमौर	420	108	528	20	9
4.	मऊगंज	332	69	401	14	8
5.	हनुमना	373	89	462	18	8
6.	नईगढ़ी	305	60	365	14	7
7.	जवा	550	92	642	16	8
8.	त्योंथर	458	89	547	18	8
9.	गंगेव	375	109	484	16	10
योग		3619	844	4463	158	77

स्त्रोत : कार्यालय, जिला शिक्षा केन्द्र रीवा (म.प्र.)

विश्लेषण एवं व्याख्या –

उपर्युक्त सारणी में प्रारम्भिक शालाओं की संख्या दर्शाई गई है। सारणी से स्पष्ट है कि जिले में कुल 3619 प्राथमिक शालायें हैं। जिसमें से सर्वाधिक 550 प्राथमिक शालायें जवा विकासखण्ड में हैं, जबकि न्यूनतम 305 प्राथमिक शालायें नईगढ़ी विकासखण्ड में स्थित हैं। इसी प्रकार जिले में माध्यमिक शालाओं की कुल संख्या 844 है जिसमें सबसे अधिक 117 माध्यमिक शालायें रीवा विकासखण्ड में स्थित हैं तथा सबसे कम 60 माध्यमिक शालायें नईगढ़ी विकासखण्ड में स्थित हैं। इस प्रकार जिले में कुल 4463 शालायें हैं। जिसमें से सर्वाधिक 642 शालायें जवा विकासखण्ड में स्थित हैं तथा सबसे कम 365 शालायें नई गढ़ी विकासखण्ड में आती हैं। इस प्रकार से रीवा जिले में स्थित 3619 प्राथमिक शालायें, 844 माध्यमिक शालायें कुल मिलाकर 4463 शालायें रीवा जिले में 'सर्व शिक्षा अभियान' के लक्ष्यों को प्राप्त करने के लिए तेजी से प्रयास कर रही हैं।

सारणी क्रमांक – 4.21

रीवा जिले के प्राथमिक विद्यालयों में आधारभूत संरचना की वर्तमान स्थिति

क्र.	विकासखण्ड का नाम	कुल विद्यालयों की संख्या	भवनयुक्त विद्यालयों की संख्या	भवन विहीन विद्यालयें की संख्या	जीर्ण–शीर्ण भवन वाले विद्यालयों की संख्या	पक्की कक्षाओं की कुल संख्या	मरम्मत योग्य कक्षाओं की संख्या	प्रधानाध्यापक कक्ष–युक्त प्राथमिक विद्यालयों की संख्या	पेयजल व्यवस्था युक्त विद्यालयें की संख्या	शौचालय व्यवस्था युक्त विद्यालयें की संख्या	बालिका शौचालय युक्त विद्यालयें की संख्या	बाउन्ड्री – वाल युक्त विद्यालयों की संख्या	मध्यान्ह भोजन हेतु रसोई व्यवस्था युक्त विद्यालयों की संख्या	खेल मैदान सहित विद्यालयों की संख्या
1.	रीवा	413	413	–	12	269	25	105	410	382	145	175	258	292
2.	रायपुर–कर्चु.	393	393	–	14	251	23	107	390	347	118	164	242	288
3.	गंगेव	375	375	–	15	238	27	105	371	324	95	147	252	251
4.	सिरमौर	420	420	–	15	278	30	100	415	375	125	171	248	273
5.	मऊगंज	332	332	–	19	224	36	92	328	271	82	122	251	262
6.	नईगढ़ी	305	305	–	20	196	41	95	301	260	85	116	221	240
7.	हनुमना	373	373	–	13	242	26	75	370	288	94	142	268	280
8.	त्योंथर	458	458	–	14	302	28	108	452	387	138	170	275	312
9.	जवा	550	550	–	18	371	36	85	545	490	171	182	280	326
	योग	3619	3619	–	140	2371	272	872	3582	3124	1053	1389	2295	2524

स्त्रोत – कार्यालय जिला शिक्षा केन्द्र, रीवा.

विश्लेषण एवं व्याख्या –

रीवा जिले में कुल 3619 प्राथमिक विद्यालय है जो अपने स्वयं के भवन में संचालित है। जिले के अन्तर्गत ऐसा कोई विद्यालय नहीं है जो भवन विहीन हो। जिले मे जीर्ण–शीर्ण भवन वाले प्राथमिक विद्यालयों की कुल संख्या 140 है तथा पक्की कक्षाओं की कुल संख्या 2371 है। जिले के प्राथमिक विद्यालयों में 272 ऐसी कक्षायें हैं जो मरम्मत योग्य हैं, जिसमें से सर्वाधिक 41 नईगढ़ी विकासखण्ड के अंतर्गत आती है। जिले मे मात्र 872 ऐसे प्राथमिक विद्यालय है, जिनमें प्रधानाध्यापक कक्ष की

अलग से व्यवस्था है जबकि शेष विद्यालयों में अलग से व्यवस्था नहीं है। जिले के 3582 ऐसे प्राथमिक विद्यालय है, जहॉ पर छात्र–छात्राओं के लिए पीने के शुद्ध जल की व्यवस्था है। तथा 3124 प्राथमिक विद्यालयों में शौचालय व्यवस्था है। तथा 1053 प्राथमिक विद्यालयों में बालकों एवं बालिकाओं के लिए अलग–अलग शौचालय व्यवस्था है। जिले में 1389 प्राथमिक विद्यालयों में बाउण्ड्री वाल है। तथा 2295 प्राथमिक विद्यालयों में छात्र–छात्राओं के मध्याह्न भोजन हेतु अलग से रसोई भी है। जिले में ऐसे प्राथमिक विद्यालय जिनमें खेल मैदान भी हैं की कुल संख्या 2524 है। इस प्रकार रीवा जिले में अभी भी शालाओं की आधारभूत संरचना सुधार योग्य है।

सारणी क्रमांक – 4.22

रीवा जिले के उच्च प्राथमिक विद्यालयों में आधारभूत संरचना की वर्तमान स्थिति

क्र.	विकासखण्ड का नाम	कुल विद्यालयों की संख्या	भवनयुक्त विद्यालयों की संख्या	भवन विहीन विद्यालयें की संख्या	जीर्ण–शीर्ण भवन वाले विद्यालयों की संख्या	पक्की कक्षाओं की कुल संख्या	मरम्मत योग्य कक्षाओं की संख्या	प्रधानाध्यापक कक्ष–युक्त उच्च प्राथमिक विद्यालयों की संख्या	पेयजल व्यवस्था युक्त विद्यालयों की संख्या	शौचालय व्यवस्था युक्त विद्यालयों की संख्या	बालिका शौचालय युक्त विद्यालयों की संख्या	बाउन्ड्री–वाल युक्त विद्यालयों की संख्या	मध्यान्ह भोजन हेतु रसोई व्यवस्था युक्त विद्यालयों की संख्या	खेल मैदान सहित विद्यालयें की संख्या
1.	रीवा	117	117	–	3	445	12	50	112	111	70	36	47	41
2.	रायपुर–कर्चु.	111	111	–	4	436	18	46	106	104	62	35	46	38
3.	गंगेव	109	109	–	4	432	16	47	105	104	60	36	45	40
4.	सिरमौर	108	108	–	3	428	12	43	102	103	54	32	40	35
5.	मऊगंज	69	69	–	4	295	15	35	63	62	36	30	35	32
6.	नईगढ़ी	60	60	–	3	270	12	36	56	55	28	28	30	31
7.	हनुमना	89	89	–	3	372	14	37	85	86	50	25	31	30
8.	त्योंथर	89	89	–	3	375	10	38	85	85	47	26	36	33
9.	जवा	92	92	–	3	382	10	40	86	88	54	27	35	34
	योग	844	844	–	30	3435	119	372	800	798	461	275	345	314

स्त्रोत – कार्यालय जिला शिक्षा केन्द्र, रीवा.

विश्लेषण एवं व्याख्या –

रीवा जिले में कुल 844 उच्च प्राथमिक विद्यालय हैं, इनमें से सभी ऐसे विद्यालय हैं जो अपने स्वयं के भवन में संचालित हैं। जिले में ऐसी कोई उच्च प्राथमिक शाला नही है जो भवन विहीन हो जिले में 30 ऐसे उच्च प्राथमिक विद्यालय हैं जिनके भवन जीर्ण–शीर्ण अवस्था में हैं, जबकि पक्की कक्षाओं की कुल संख्या 3435 है। 119 कक्षायें मरम्मत योग्य हैं। जिले के कुल 372 उच्च–प्राथमिक विद्यालय में प्राधानाध्यापक कक्ष की अलग से व्यवस्था है। 800 विद्यालयों में शुद्ध पेयजल की व्यवस्था है। जिले के 798 प्राथमिक विद्यालयों में शौचालय व्यवस्था है तथा मात्र 461 उच्च प्राथमिक विद्यालयों में बालकों तथा बालिकाओं के लिए अलग–अलग शौचालय व्यवस्था है। जिले के 275 उच्च प्राथमिक विद्यालयों में बाउण्ड्रीवाल है तथा 345 ही ऐसे विद्यालय हैं जिनमें छात्र–छात्राओं के मध्याह्न भोजन हेतु अलग से रसोई की व्यवस्था है तथा मात्र 314 उच्च प्राथमिक विद्यालय ऐसे हैं जिनमें छात्रों के खेलने हेतु स्वयं के खेल मैदान हैं। जिले में प्रारम्भिक शालाओं में भौतिक सुविधाओं के अभाव के कारण सर्व शिक्षा अभियान कार्यक्रम प्रभावित हो रहा है।

शिक्षको की संख्या एवं छात्र–शिक्षक अनुपात :

शिक्षक ही विद्यालय तथा शिक्षा पद्धति की वास्तविक गत्यात्मक शक्ति है। शिक्षक ही वह शक्ति है जो प्रत्यक्ष या अप्रत्यक्ष रूप से आने वाली सन्ततियों पर अपना प्रभाव डालती है। अतः यह कहा जा सकता है कि मानव समाज एवं देश की उन्नति के लिए तथा शिक्षण की उचित व्यवस्था के लिए विद्यालयों में शिक्षकों की अत्यन्त आवश्यकता है। साथ ही शिक्षण व्यवस्था में शिक्षकों एवं छात्रों का अनुपात एक महत्वपूर्ण अवयव है जिस पर शिक्षा की गुणवत्ता निर्भर करती है। यदि कक्षा में छात्रों की संख्या बहुत अधिक हो जाए तो शिक्षक छात्र–छात्राओं की वैयक्तिक निर्देशन देने में तथा प्रत्येक को कक्षा–शिक्षण के साथ वैयक्तिक सहभागिता एवं उत्प्रेरणा प्रदान करने में केवल कठिनाई का ही अनुभव नहीं करता वरन् असमर्थ भी रहता है और कक्षा व्यवस्था भी अव्यवस्थित हो जाती है। अधिक संख्या के कारण कक्षा में भौतिक दृष्टि से वायु भी प्रदूषित हो जाती है और छात्र थकावट और बेचैनी अनुभव करने लगते हैं। परिणामस्वरूप उनका ध्यान शिक्षक की ओर से हट जाता है। शिक्षक को भी कक्षा व्यवस्था में अधिक श्रम करना पड़ता है फलस्वरूप पूरा ध्यान

शिक्षण में नहीं लग पाता है। तात्पर्य यह है कि शिक्षक और शिक्षार्थी दोनों अधिक छात्र संख्या से दुष्प्रभावी होते हैं। अच्छे शिक्षण के लिए 1:25 के अनुपात में शिक्षक–शिक्षार्थी की संख्या एक कक्षा में होनी चाहिए।

कक्षा में शिक्षक–शिक्षार्थी अनुपात से यह भी पता लगता है कि विद्यालय में शिक्षकों की नियुक्ति और शिक्षण कक्ष की व्यवस्था में कहाँ तक सक्षम रहता है।

रीवा जिले में शिक्षक–छात्र अनुपात की वर्तमान स्थिति, अनिवार्य शिक्षा योजना के प्रति छात्र वृद्धि अभियान 'सर्व शिक्षा अभियान' तथा माता–पिता में बालक–बालिकाओं के शिक्षा के प्रति बढ़ती हुई चेतना है। साथ ही जनसंख्या की वृद्धि दर भी इसके लिए प्रमुख रूप से उत्तरदायी है।

सारणी क्रमांक – 4.23

रीवा जिले के प्रारम्भिक शालाओं में शिक्षकों की वर्तमान संख्या

स. क्र.	विकासखण्ड का नाम	शिक्षकों की कुल संख्या (प्रशिक्षित एवं अप्रशिक्षित)																
		यू.डी.टी.		एल.डी.टी.		अध्यापक		सहायक अध्यापक		संविदा शिक्षक–2		संविदा शिक्षक–3		गुरूजी		महायोग		
		कुल	प्रशिक्षित	कुल	प्रशिक्षित	कुल	प्रशिक्षित	कुल	प्रशिक्षित	कुल	प्रशिक्षित	कुल	प्रशिक्षित	कुल	प्रशिक्षित	कुल	प्रशिक्षित	प्रतिशत
1.	रीवा	44	43	396	396	52	52	284	284	497	497	70	70	226	220	1569	1562	99.55
2.	रायपुर–कर्चु.	87	33	112	112	34	34	193	193	350	350	18	18	209	204	1003	944	94.11
3.	गंगेव	25	23	140	140	103	103	330	330	444	444	57	57	233	226	1332	1323	99.32
4.	सिरमौर	45	38	135	135	69	69	372	372	356	356	25	25	230	222	1232	1227	99.59
5.	मऊगंज	18	17	325	325	20	20	111	111	291	291	33	33	151	145	949	942	99.26

6.	नईगढ़ी	09	09	72	72	20	20	27	27	226	226	161	161	187	180	702	695	99.00
7.	हनुमना	38	31	117	117	31	31	09	09	302	302	159	159	177	170	833	819	98.31
8.	त्योंथर	48	47	299	299	24	24	120	120	344	344	29	29	356	349	1220	1212	99.34
9.	जवा	24	22	227	227	32	32	365	365	392	392	4	4	459	452	1503	1494	99.46
	योग	338	263	1823	1823	385	385	1811	1811	3202	3202	556	556	2228	2168	10343	10218	98.80

स्त्रोत : जिला शिक्षा एवं प्रशिक्षण संस्थान, रीवा

विश्लेषण एवं व्याख्या –

सारणी से स्पष्ट है कि रीवा जिले में प्रारम्भिक स्तर पर कुल 10343 शिक्षक पदस्थ हैं। जिनमें से 338 शिक्षक हैं, इनमें 263 शिक्षक प्रशिक्षित हैं। इसी प्रकार 1823 सहायक शिक्षक हैं, जिनमें से सभी को व्यावसायिक प्रशिक्षण प्राप्त है। जिले में 385 अध्यापक, 1811 सहायक अध्यापक, 3202 संविदा शिक्षक वर्ग–2,556 संविदा शिक्षक वर्ग–3 पदस्थ हैं, जिनमें से सभी शिक्षक व्यावसायिक रूप से प्रशिक्षण प्राप्त कर चुके हैं। जिले में गरूजी की संख्या 2228 है, जिनमें से 2168 को व्यावसायिक प्रशिक्षण प्राप्त है इस प्रकार से जिले में 98.80ः शिक्षकों को व्यावसायिक प्रशिक्षण प्राप्त है। लगभग सभी विकासखण्डों में प्रशिक्षित शिक्षकों का प्रतिशत एक जैसा ही प्रतीत होता है जो लगभग शत्–प्रतिशत के आस पास है, जो शैक्षिक विकास में वृद्धि का एक शुभ संकेत है।

सारणी क्रमांक – 4.24

रीवा जिले में छात्र–शिक्षक अनुपात

क्र.	विकासखण्ड का नाम	प्राथमिक स्तर पर छात्र–शिक्षक अनुपात			माध्यमिक स्तर पर छात्र–शिक्षक अनुपात		
		नामांकन	शिक्षकों की संख्या	छात्र–शिक्षक अनुपात	नामांकन	शिक्षकों की संख्या	छात्र–शिक्षक अनुपात
1.	रीवा	87961	1122	78	22169	447	49
2.	रायपुर–कर्चु.	31661	690	46	18327	313	58

3.	गंगेव	31406	937	34	13319	395	34
4.	सिरमौर	36799	888	41	19722	344	58
5.	मऊगंज	47466	671	71	12413	278	45
6.	नईगढ़ी	30954	511	61	11216	191	59
7.	हनुमना	34671	563	62	12365	270	46
8.	त्योंथर	28254	888	32	12319	332	38
9.	जवा	34594	1135	31	18417	368	50
योग		363766	7405	50	140267	2938	48

स्त्रोत : जिला शिक्षा केन्द्र, रीवा (म.प्र.)

विश्लेषण एवं व्याख्या –

उपर्युक्त सारणी से स्पष्ट है कि रीवा जिले में प्राथमिक स्तर पर छात्र–शिक्षक अनुपात 50 है अर्थात् 50 छात्रों पर एक शिक्षक है। जिले में सर्वाधिक छात्र–शिक्षक अनुपात रीवा विकासखण्ड में है जहॉ पर 78 छात्रों पर एक शिक्षक है तथा सबसे कम छात्र–शिक्षक अनुपात जवा विकासखण्ड में है जहॉ पर 31 छात्रों के लिए एक शिक्षक है। जो कि एक अच्छे कक्षा शिक्षण के लिए लगभग उपयुक्त है। इसी प्रकार जिले में माध्यमिक स्तर पर छात्र–शिक्षक अनुपात 48 है। अर्थात् 48 छात्रों पर एक शिक्षक उपलब्ध हैं। जिले में सर्वाधिक छात्र–शिक्षक अनुपात नईगढ़ी विकासखण्ड में है जहॉ पर 59 छात्रों पर एक शिक्षक उपलब्ध है, जबकि सबसे कम छात्र–शिक्षक अनुपात गंगेव विकासखण्ड में है, जहॉ पर 34 छात्रों पर एक शिक्षक है। इस प्रकार छात्र नामांकन दर की तुलना में शिक्षकों की संख्या कम है। सर्व शिक्षा अभियान के लक्ष्य की प्रतिपूर्ति हेतु शिक्षक वृद्धि दर आवश्यक है।

रीवा जिले में साक्षरता स्थिति :

जो व्यक्ति किसी भाषा में समझ के साथ लिख और पढ़ सकता है, वह साक्षर कहलाता है। जो पढ़ सकता है परन्तु लिख नहीं सकता साक्षर नहीं कहलाता। साक्षर माने जाने के लिए यह आवश्यक नहीं है कि व्यक्ति ने कोई औपचारिक शिक्षा प्राप्त की हो। 1961, 1971 तथा 1981 की जनगणनाओं में 0–4 आयु समूह के बच्चों को निरक्षर माना जाता रहा है, परन्तु 1991 की जनगणना से आयु समूह 0–6 के बच्चों को निरक्षर माना जाने लगा। 1951 की जनगणना में साक्षरता का आँकलन निरक्षर जनसंख्या की 100 प्रतिशत गणना के आधार पर न किया जाकर सेम्पल के आधार पर किया गया था इसलिए आज हम 1951 की स्थिति में साक्षरता की तुलना नहीं कर सकते हैं। परन्तु निश्चित ही 1951–1991 की अवधि के दरम्यान साक्षरता की जो वृद्धि दर रही है, उससे अधिक वृद्धि 1991–2001 के दशक में हुई है। आज रीवा जिले की साक्षरता दर 62.33ः है, जबकि 1991 में रीवा जिले की साक्षरता दर 34.97ः थी। जिले में साक्षरता के क्षेत्र में पिछले दशक में अच्छी प्रगति हुई है। जिले में पुरूष साक्षरता दर 75.97ः एवं स्त्री साक्षरता दर 47.83ः है। जिले की 59.47ः ग्रामीण एवं 76.30 प्रतिशत नगरीय जनसंख्या साक्षर हैं। (सारणी क्रमांक 3.19).

सारणी क्रमांक – 4.25

रीवा जिले की साक्षरता (2001)

क्र.	विवरण	कुल साक्षरता	नगरीय साक्षरता	ग्रामीण साक्षरता
1.	कुल साक्षर व्यक्ति	991410	205777	785633
2.	साक्षर पुरूष	621967	123847	498120
3.	साक्षर स्त्रियॉ	369443	81930	287513
4.	कुल साक्षरता दर	62.33	76.30	59.47
5.	पुरूष साक्षरता दर	75.97	85.95	73.85
6.	स्त्री साक्षरता दर	47.83	65.33	44.41

स्त्रोत – जिला सांख्यिकी पुस्तिका 2002, पृ. 50.

सारणी क्रमांक – 4.26

रीवा जिला की तहसीलवार ग्रामीण व नगरीय साक्षरता प्रतिशत (2001)

जिला/तहसील	ग्रामीण साक्षरता			नगरीय साक्षरता			कुल साक्षरता		
	पुरूष	स्त्री	योग	पुरूष	स्त्री	योग	पुरूष	स्त्री	योग
जिला रीवा	73.85	44.41	59.47	85.95	65.33	76.30	75.97	47.83	62.33
हुजूर	77.91	51.88	65.02	8.09	72.59	81.41	83.56	61.64	42.23
रायपुर–कर्चु.	77.61	48.62	63.34	–	–	–	77.61	48.62	63.34
गुढ़	72.56	41.30	57.19	82.58	52.36	68.03	73.77	42.58	58.47
सिरमौर	76.09	47.48	61.86	83.07	57.88	71.29	76.82	48.47	62.81
त्योंथर	72.97	43.29	59.09	82.98	58.00	70.96	73.60	44.69	59.83
मऊगंज	72.16	41.49	57.00	77.02	48.19	62.98	72.70	42.21	57.65
हनुमना	66.68	34.00	50.90	77.97	50.65	65.06	67.54	35.65	51.95

स्त्रोत : जिला सांख्यिकी पुस्तिका 2002, पृ.क्र. 50

विश्लेषण एवं व्याख्या –

उपरोक्त सारणी में रीवा तहसीलवार ग्रामीण व नगरीय साक्षरता को स्पष्ट किया गया है। सारणी से स्पष्ट है कि जिले में सन् 2001 में कुल साक्षरता 62.33ः थी, जिसमें 75.97ः पुरूष व 47.83ः महिला साक्षरता थी। जिसके अन्तर्गत जिले की कुल ग्रामीण साक्षरता 59.47ः थी, जिसमें क्रमशः 73.85ः पुरूष व 44.41ः महिला साक्षरता रही, इसी प्रकार जिले की कुल नगरीय साक्षरता 76.30ः थी, जिसमें क्रमशः 85.95ः पुरूष व 65.33ः महिला साक्षरता थी।

विकास खण्ड	बालक					बालिका					कुल योग	साक्षरता	
	अजा	अजजा	अपिव	सामान्य	योग	अजा	अजजा	अपिव	सामान्य	योग		पुरूष	स्त्री
रीवा	7786	4571	16100	10094	38551	7347	3895	15394	9019	35655	74206	78.7	43.8
रायपुर–कर्चु.	1158	852	2437	2123	6570	1296	730	2355	1435	5816	12386	78.4	49.6
गंगेव	1926	1000	4697	2810	10433	1780	1011	2881	2615	8287	18720	76.8	48.7
सिरमौर	4426	4645	6995	8960	25093	4103	4019	6126	8671	22919	47042	77.6	48.8
मऊगंज	1813	1491	4128	3685	11117	1705	1374	3725	3078	9882	20999	74.8	46.5
नईगढ़ी	3501	992	5333	3489	13315	3190	751	4860	3229	12030	25345	72.3	45.9
हनुमना	4225	5094	8081	5874	23274	3809	3951	7328	5165	20253	43527	73.5	44.6
त्यौंथर	6043	5732	11393	10650	33818	5531	5040	10348	10102	31021	64839		
जवा	9009	9344	10664	16214	45231	9193	9022	14471	15419	48105	93336	75.6	46.9

सारणी क्रमांक – 4.27

रीवा जिला के विकासखण्डवार, जातिवार एवं लिंगवार जनसंख्या तथा साक्षरता प्रतिशत (2001)

स्त्रोत : कार्यालय, जिला शिक्षा केन्द्र, रीवा

विश्लेषण एवं व्याख्या –

उपरोक्त सारणी में रीवा जिला के विकासखण्डवार, जातिवार एवं लिंगवार जनसंख्या तथा साक्षरता को स्पष्ट किया गया है। सारणी से स्पष्ट है कि सन् 2001 की जनगणना के अनुसार जवा विकासखण्ड में बालक–बालिकाओं की जनसंख्या 93336 है जिसमें 45231 बालक तथा 48105 बालिकाएँ शामिल हैं, जो कि जिले के अन्य विकासखण्डों की तुलना में सबसे अधिक है। जहाँ पर पुरुषों की साक्षरता 75.6 प्रतिशत एवं स्त्रियों की साक्षरता 46.9 प्रतिशत है, जबकि रायपुर–कर्चुलियान विकासखण्ड में बालक बालिकाओं की जनसंख्या 12386 है, जिसमें

6570 बालक एवं 5816 बालिकाएँ शामिल हैं जो कि अन्य विकासखण्डों की तुलना में सबसे कम है। यहाँ पर पुरुष साक्षरता 78.4 प्रतिशत तथा स्त्री साक्षरता 49.6 प्रतिशत है। जिले के रीवा विकासखण्ड में पुरूषों की साक्षरता 78.7 प्रतिशत है जो कि अन्य विकासखण्डों की तुलना में सबसे अधिक जबकि यहीं पर स्त्रियों की साक्षरता 43.8 प्रतिशत है जो कि अन्य विकासखण्डों की तुलना में सबसे कम है।

सन् 2001 की जनगणना के अनुसार भारत की साक्षरता दर 65.38 प्रतिशत है। सम्पूर्ण मध्य प्रदेश के लिए साक्षरता की दर जो इस जनगणना में उभर कर आई है, वह 63.7 प्रतिशत है।[1] प्रदेश के 22 जिलों की साक्षरता दर प्रदेश की औसत साक्षरता दर से अधिक है, जबकि शोध क्षेत्र रीवा जिले की साक्षरता दर प्रदेश की साक्षरता से भी कम है।

यह सर्वविदित सत्य है कि शिक्षा किसी भी व्यक्ति समाज और राष्ट्र के विकास की धुरी होती है। शिक्षा का सम्बन्ध सिर्फ साक्षरता से ही नहीं है बल्कि शिक्षा चेतना और दायित्व को जागृत करने वाला औजार भी है। शिक्षा को एक मापक या पैमाना के तौर पर देखा जाता है, जिसके आधार पर व्यक्ति, राज्य या देश का मूल्यांकन किया जाता है। यदि इस मूल्यांकन के दृष्टिकोण से हम रीवा जिले में साक्षरता की वर्तमान स्थिति को देखे तो पायेंगे कि शनैः शनैः ही सही साक्षरता की दिशा में रीवा जिले नें प्रगति की है।

रीवा जिले में साक्षरता में बढ़ोत्तरी एक सकारात्मक दृष्टि की ओर संकेत करती है, परन्तु यह अन्य जिलों की अपेक्षाकृत कम है। रीवा जिले के ही विभिन्न विकासखण्डों में साक्षरता दर में काफी अन्तर है।